पिशाच बन जाता है, मनुष्य नहीं रहता। यही कारण है कि आज अपनी स्वाभाविकता को खोकर, धर्म से विमुख होकर इंसान दुखी है, अशांत है, परेशान है, अवनति के पथ पर है। अतः स्वेच्छाचारी मूल अधिकार युक्त निरंकुश उत्तरदायित्वहीन राजनीति का साम्राज्य स्थापित हुआ है।

'हनन किया हुआ धर्म, प्रजा को भी मार देता है और रक्षित किया हुआ धर्म लोगों की भी रक्षा करता है।' इसका एक उदाहरण है यूनान, रोम, सीरिया, बेबीलोन आदि की प्राचीन सभ्यताएं, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को हिला दिया था, जिनके पास धनबल, जनबल, सैन्यबल सभी कुछ था, पर आज पृथ्वी पर उनका नामोनिशां भी शेष नहीं है। कारण एक ही है, उनके पास लोगों को सनातन व अमर बनाने की, इंसानियत जगाने की शक्ति नहीं थी, धर्म नहीं था और यही उनके पूर्ण विनाश का कारण भी बना। प्राचीन भारत, धर्म को अपनाकर ही उन्नत था। आज धर्म की अवहेलना करके, इससे विमुख होकर हम अवनति की ओर जा रहे हैं।

धर्म जीवन जीने की कला एवं राजनीति उसका विज्ञान है

धर्म जीवन को जीने की कला है। जीवन को जीने का विज्ञान है। धर्म यदि जीवन कला की आत्मा है, तो राजनीति जीवन-कला का शरीर है। शरीर न हो तो आत्मा अदृश्य हो जाती है, खो जाती है, और आत्मा न हो तो शरीर सड़ जाता है, दुर्गन्ध देने लगता है। धर्म के बिना राजनीति सड़ा हुआ शरीर हो जाता है। राजनीति से विहीन धर्म भी अदृश्य हो जाता है, विलीन हो जाता है। धर्म और राजनीति, दोनों के बीच के आन्तरिक सम्बन्ध को समझ लेना जरूरी है।

जीवन में जो सक्रिय सत्ता है, जीवन को चलाने और निर्मित करने की जो व्यवस्था है, उस सबका नाम राजनीति है। भारत का दुर्भाग्य समझना चाहिए कि हजारों वर्षों से राजनीति और धर्म के बीच, कोई सम्बन्ध नहीं रहा। धर्म का राजनीति से कोई लेना-देना न था।

'कोउ होइ नृप हमैं का हानी'

धर्म को हमने हजारो वर्षों से राजनीति ने निरपेक्ष बना दिया और बदले में राजनीति ने अपने को धर्म निरपेक्ष बना लिया। और अन्तिम परिणाम, राजनीति अब धर्मनिरपेक्ष है। हजारों वर्षों तक धार्मिक आदर्श यह कहता रहा कि राजनीति से हमें कुछ लेना-देना नहीं है, और राजनीति ने अभी कुछ वर्षों पहले उसका बदला लिया और उसने कहा, धर्म से हमें कुछ लेना-देना नहीं है। राजनीति के धर्म निरपेक्ष होने का क्या अर्थ हो सकता है? जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण है, जो भी श्रेष्ठ है, राजनीति को उससे कोई प्रयोजन नहीं।

धर्म से निरपेक्ष होने का अर्थ होता है - सत्य से निरपेक्ष होना, प्रेम से निरपेक्ष होना, जीवन के गहनतम ज्ञान से निरपेक्ष होना। वह समाज, जो धर्म पर आधारित नहीं, उसमें बिना आत्मा के शरीर की तरह, दुर्गन्ध पैदा हो जाएगी जैसे मरी हुई लाश में पैदा हो जाती है। शायद मनुष्य जाति के इतिहास में कोई भी देश भारत की तरह स्वतंत्र होकर इस भांति कभी पतित नहीं हुआ। यह दुर्घटना कैसे घट सकी? यह दुर्घटना घट सकी इसलिए कि जीवन को ऊँचा उठाने वाले जो भी सिद्धान्त हैं, उन सब सिद्धान्तों का इकट्ठा नाम धर्म है, और हमारे देश की राजनीति धर्म के प्रति निरपेक्ष है। धर्म का उससे कोई प्रयोजन नहीं।

एक हजार वर्ष तक मुल्क गुलाम था। आश्चर्य की बात है कि अच्छे लोगों को गुलामी बुरी नहीं लगी। मुल्क के साधु-सन्यासी स्वर्ग और परलोक की चर्चायें करते रहे, और मुल्क गुलाम और पतित होता चला गया।

आज धर्म की चुनौती राजनीति को स्वीकार नहीं

धर्म एक चुनौती है, ऊपर उठाने के लिए। राजनीतिक नहीं चाहता है कि धर्म से राजनीति का कोई सम्बन्ध हो, क्योंकि जैसे ही धर्म से राजनीति का सम्बन्ध होता है, राजनीतिक को अपने भीतर आमूल परिवर्तन की आवश्यकता पड़ जाती है। जैसे ही धर्म राजनीति से सम्बन्धित होगा, वैसे ही राजनीतिज्ञ को अपने को बदलना पड़ेगा। जब राजनीति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता, तो उसे षडयंत्र करने, निम्नतम व्यवस्था देने, चोरी, बेईमानी और असत्य का उपयोग करने की पूर्णतम सुविधा उपलब्ध हो जाती है।

राजनीति धर्म से अलग होकर सिर्फ कूटनीति रह जाती है, राजनीति नहीं रह जाती। वह पॉलीटिक्स नहीं होती, सिर्फ डिप्लोमेसी होती है। जिसे झूठ बोलना हो, उसे घोषणा करनी पड़ती है, कि सत्य एकमात्र नियम है। अगर झूठ ठीक से बोलना है, तो सत्य की बातें करना जरूरी है, यह ही सीधी कूटनीति है।